ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST \ Vol. 1 \ Issue 5 \ December 2023
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v1i5.25

महिला पुलिस कर्मियों का कार्यस्थल पर समायोजन

किशन सोनी[1], डॉ0 अमूल्य कुमार सिंह[2]

[1]शोध–छात्र–समाजशास्त्र, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

[2]प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, अयोध्या

[1]**Email:** sonikishan1990@gmail.com

सारांश:

आधुनिक समाज के संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन ने महिलाओं के प्रस्थिति में समान अवसर प्रदान किया है। आर्थिक रूप से सशक्त होने के लिए महिलाओं ने घरों से कदम निकाल कर रोजगारपरक होना स्वीकार किया है जिससे उनकी, उनके परिवार की मौलिक आवश्यकताओं एवं उनके रहन–सहन के स्तर में वृद्धि हो सके। महिलाओं का पुलिस विभाग में प्रवेश उनके अदम्य साहस, धैर्य, पराक्रम का परिचय कराती है। पुलिस विभाग में समय, क्षेत्र, कार्य में लगातार परिवर्तन होने से महिला पुलिसकर्मी को घर एवं कार्य मे समायोजन करने में कई संघर्षो से जुझना पड़ता है। एक महिला पुलिस को विभिन्न प्रकार की प्रस्थितियों से जुड़े भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है, जिसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व व विभागीय उत्तरदायित्वों के बीच भी अपनी गतिविधियों एवं जवाबदेही को स्पष्ट कर समायोजन करना पड़ता है। प्रस्तुत शोधपत्र के अन्तर्गत महिला पुलिसकर्मियों के कार्यस्थल पर समायोजन की जानकारी ली गयी है।

मूल शब्द: महिला पुलिस, समाज, संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन, समायोजन, पारिवारिक व विभागीय उत्तरदायित्व

प्रस्तावना:

वर्तमान परिपेक्ष्य में महिलाएं अब आत्मनिर्भर बन रही हैं, उन्होने अपनी शिथिलताओं को त्याग कर स्वयं को दृढ़ करने का प्रयत्न किया है। समाज में अपनी एक विशेष पहचान रखी है जिससे वह निर्भीक, निडर, स्वतंत्र, परिपक्व एवं दृढ़ संकल्प शक्ति रखने वाली महिला के रूप में समाज में अपनी पहचान बनाई है। उसी पहचान में सम्मिलित महिला पुलिस की पहचान भी है जो महिलाओं के अदम्य साहस, धैर्य, पराक्रम का परिचय कराती है। एक महिला पुलिस का कार्य महिलाओं से सम्बन्धित अपराध से लेकर समाज कल्याण गतिविधियों के कार्यों तक विभिन्न क्रिया कलापों द्वारा सम्पन्न किया जाता है एवं उसकी भूमिका का दायित्व सिर्फ विभाग तक ही सीमित नही रहता बल्कि वह दोहरी भूमिका का निर्वहन भी करती है एक ओर परिवार में पारम्परिक भूमिका का निर्वहन तो दूसरी ओर विभागीय भूमिका का निर्वहन।[1] दोनों ही भूमिका को वह हर प्रकार से समायोजन करके निभाती है। फिर भी दोनों भूमिकाओं के बीच सामन्जस्य स्थापित करने में उनको काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। महिला पुलिस का कार्य करने की विभाग में कोई निश्चित समय सीमा पूर्व निर्धारित नही रहती एवं उनका कार्य क्षेत्र भी लगातार परिवर्तित होता रहता हैं ऐसे में विभागीय कार्यों में समायोजन कर पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

समायोजन से तात्पर्य एक सहयोगी सामाजिक प्रक्रिया है। विभागीय कार्यों से जोड़ने वाली प्रक्रिया ही कार्यस्थल पर समायोजन की प्रक्रिया कहलायेगी।

मैकाइवर व पेज के अनुसार – "समायोजन शब्द उस प्रक्रिया को प्रकट करता है, जिसके अनुसार मनुष्य अपने पर्यावरण के साथ सन्तुलन स्थापित करता है।"

इस परिभाषा के अनुसार महिला पुलिस का विभाग में अन्य कर्मचारियों एवं कार्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करना ही समायोजन कहलाता है।[2] भारतीय सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक मनष्य का एवं उसके क्रियाकलापों का एक विशेष महत्व होता है वह कोई भी कार्य करता है तो उसके पीछे कोई न कोई उद्देश्य आवश्यक रूप से समाहित रहता है, जो उसके तथा उसके परिवार के संचालन एवं विकास

में सहायक होता है। महिला पुलिस भी इसी सामाजिक संरचना का एक अंग है जो समाज में दोहरी भूमिकाओं का निर्वहन करती है। जो कभी–कभी भूमिकाओं की असंगतता के कारण द्वंद की स्थिति को भी उत्पन्न करता है।[3] विभागीय कार्यों का दबाव, स्थान की स्थानांतरण, विभागीय समयों में अन्तर महिला पुलिस के अन्तर्मन में भूमिका संघर्ष की स्थिति को उत्पन्न करता है। एक महिला पुलिस का उत्तरदायित्व होने के साथ ही साथ उस महिला पर पारिवारिक उत्तरदायित्व भी होता है जो सामाजिक मानदंडों के अनुसार निर्धारित होता है। एक कामकाजी महिला को विभिन्न प्रकार की प्रस्थितियों से जुड़े भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है, जिसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व व विभागीय उत्तरदायित्वों के बीच भी अपनी गतिविधियों एवं जवाबदेही को स्पष्ट कर समायोजन करना पड़ता है।

दीपा माथुर – 1992 महिला, परिवार और कार्य में आपके अनुसंधान से पता चलता है कि अध्ययन की गई 225 कामकाजी महिलाओं में से 38% का 'घर का समायोजन' उच्चकोटि, 43% का मध्यम, तथा 19% का निम्न कोटि का था। 'नौकरी समायोजन' में 44% ने उच्च, 30% ने मध्यम तथा 26% ने निम्न कोटि का समायोजन दर्शाया। नौकरी समायोजन का स्तर नौकरी की प्रकृति, सेवा अवधि, तथा भावी योजनाओं के साथ ही विविध पाया गया। दूसरी ओर 'घर का समायोजन परिवार संरचना, आकार, पति तथा ससुराल वालों से सहयोग, तथा स्वमूल्यांकन पर निर्भर करता है। दोनों स्थितियों को एक साथ रखकर कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाएं सामान्यतया घर की जिम्मेदारियों तथा अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इस प्रकार योजना बना लेती है कि समायोजन करने में कठिनाई नहीं आती।[4]

योजना (दिसम्बर 2020, पृ0सं0–12) में रेखा शर्मा ने अपने आलेख ''कार्य स्थल और घर पर समानता'' में महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता लाने और महिलाओं के साथ हिंसा समाप्त कराने की दिशा में हमने काफी लम्बा रास्ता तय किया है। महिलाएं अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में कई किरदार निभाती है और इन सभी भूमिकाओं से जुड़े अधिकार उन्हें मालूम होना चाहिए ताकि जब उनके अधिकारों का हनन हो तो वे जानती हो कि किसका दरवाजा खटखटाना है।[5]

शोध प्रारुप :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद का चयन किया गया है। अयोध्या जनपद में नियुक्त 464 महिला पुलिस कर्मियों में से 100 महिला पुलिस का दैव निर्दर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। अध्ययन के अन्तर्गत प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीय स्रोत के अन्तर्गत सरकारी रिकार्ड, रिपोर्ट आदि का संकलन किया गया।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर महिला पुलिस से यह जानने का प्रयत्न किया है कि उनके कार्य समय सीमा का निर्धारण कितना है। इस प्रश्न के उत्तरों को निम्न सारणी संख्या 01 द्वारा दर्शाया गया है–

सारणी संख्या 01

महिला पुलिसकर्मी की कार्य समय सीमा निर्धारण

क्र0सं0	कार्य समय सीमा	महिला पुलिकर्मियों की संख्या	प्रतिशत
1	6–8 घंटा	20	20.00
2	8–10 घंटा	28	28.00
3	10–12 घंटा	52	52.00
4	12 से अधिक	––	––
योग		100	100

उपर्युक्त सारणी में 52 प्रतिशत अर्थात् चयनित महिला पुलिस कर्मियों में से 52 महिला पुलिस कर्मियों ने उत्तर दिया कि उनकी कार्य समय सीमा 10 से 12 घंटे तक का होता है जो अधिक है एवं जिससे उनको शारीरिक थकान का अनुभव होता है जिससे वह घर वापस जाकर कार्य करने में अपने आपको असमर्थ पाती हैं। 28 प्रतिशत अर्थात् 28 महिला पुलिस कर्मियों ने कार्य समय सीमा को 8 से 10 घंटा बताया तथा 20 प्रतिशत अर्थात् 20 महिला पुलिस कर्मियों ने अपने कार्य समय सीमा को 6 से 8 घंटा बताया।

चयनित महिला पुलिस कर्मियों से शोधार्थी ने अपने साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्रश्न किया कि असमय ड्यूटी से उनकी कार्यक्षमता पर क्या प्रभाव पड़ता है जिसका उत्तर सारणीबद्ध रूप से प्रदर्शित किया गया है–

सारणी संख्या 02

असमय ड्यूटी से महिला पुलिकर्मियों के कार्यक्षमता पर प्रभाव

क्र0सं0	कार्यक्षमता पर प्रभाव	महिला पुलिकर्मियों की संख्या	प्रतिशत
1	जीवन अवसर	20	20
2	संघर्षमय	35	35
3	मानसिक तनाव	30	30
4	सामान्य	15	15
योग		100	100

उपरोक्त सारणी में असमय ड्यूटी के कारण महिला पुलिस कर्मियों के कार्यक्षमता पर भी प्रभाव पड़ता है 35 प्रतिशत अर्थात् 35 महिला पुलिस कर्मियों ने बताया है कि असमय ड्यूटी से उनका समस्त कार्य एवं जिम्मेदारी काफी हद तक संघर्षमय हो जाती है जिससे कार्यों में उनकी रूचि समाप्त हो जाती है और वह बिना रूचि के कार्य को बोझ समझती है। 30 प्रतिशत महिला पुलिस यानि 30 महिला पुलिस को असमय ड्यूटी से मानसिक तनाव उपस्थित हो जाता है एवं कार्य को करने में झुंझलाहट आती है। परन्तु 20 प्रतिशत अर्थात 20 चयनित महिला पुलिस कर्मियो ने इसको जीवन अवसर की संज्ञा दी तथा 15 प्रतिशत यानि 15 महिला पुलिस कर्मियों ने इसको सामान्य परिस्थिति स्वीकार किया है।

पुलिस विभाग में कार्य करने पर स्वास्थ्य पर प्रभाव :

पुलिस विभाग में अस्त–व्यस्त दिनचर्या, संवेदनशील जगहों पर तैनाती, अपराधियों की निगरानी एवं उनके पीछे भागा–दौड़ी, असमय कभी भी ड्यूटी एवं उच्च अधिकारियों के प्रति जवाबदेही के कारण महिला पुलिस कर्मियों को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे वह अपने को तनावग्रस्त महसूस करती है, चूंकि महिलाएं स्वभाव से नरम, भावुक होती है, उनके व्यवहार में कठोरता की कमी होती है एवं पुलिस विभाग एक ऐसा विभाग होता है जिसमें कठोरता की मांग सबसे अधिक होती है ऐसे में महिला पुलिस के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः पुलिस विभाग में कार्य कर रही महिला पुलिस कर्मियों के स्वास्थ्य पर पुलिस विभाग में कार्य करने से प्रभाव पड़ता है कि नही? जानने के लिए उनसे प्रश्न किया गया एवं प्राप्त उत्तर को सारणी के द्वारा प्रदर्शित किया गया–

सारणी संख्या 03

पुलिस विभाग में कार्य करने से स्वास्थ्य पर प्रभाव

क्र0सं0	स्वास्थ्य पर प्रभाव	महिला पुलिकर्मियों की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	66	66
2	नहीं	34	34
योग		100	100

उपर्युक्त सारणी में 66 प्रतिशत अर्थात 66 महिला पुलिस कर्मियों का मानना है कि पुलिस विभाग में कार्य करने पर उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है ड्यूटी की अनियमितता, समय में बदलाव के कारण उनका स्वास्थ्य अधिक प्रभावित होता है वह कोई भी कार्य नियमित दिनचर्या के रूप में नही कर सकती है जबकि 34 प्रतिशत अर्थात 34 महिला पुलिस कर्मियों ने यह स्वीकार किया कि पुलिस विभाग में कार्य के दौरान उनके स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नही पड़ता क्योंकि वह उस कार्य में अनुभवशील हो चुकी है। परन्तु जिन महिला पुलिस कर्मियों के स्वास्थ्य प्रभावित होते है उनके स्वास्थ्य प्रभावित होने के कई कारण हो सकते हैं जिनको महिला पुलिस कर्मियों से सारणीबद्ध रूप से प्रश्न किया गया एवं प्राप्त उत्तर को भी सारणीबद्ध रूप से दर्शाया गया है–

सारणी संख्या 04

पुलिस विभाग में कार्य करने पर स्वास्थ्य प्रभावित होने के कारण

क्र0सं0	स्वास्थ्य प्रभावित होने के कारण	महिला पुलिकर्मियों की संख्या	प्रतिशत
1	कार्य के अधिक बोझ के कारण	36	36
2	असमय ड्यूटी के कारण	45	45
3	विभाग द्वारा आचरण	12	12
4	ट्रांसफर के कारण	7	7
योग		100	100

उपर्युक्त सारणी में 45 अर्थात 45 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों ने उत्तर दिया कि पुलिस विभाग में असमय ड्यूटी के कारण उनका स्वास्थ्य अधिक प्रभावित होता है जबकि 36 महिला पुलिस कर्मियों अर्थात् 36 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का कहना था कि कार्य के अधिक बोझ के कारण उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है व 12 महिला पुलिस कर्मियों अर्थात् 12 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का मानना है कि विभाग द्वारा किये गये आचरण के अनुरूप उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा 7 महिला पुलिस कर्मियों अर्थात 7 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मियों का कहना था कि कई बार ट्रांसफर के कारण भी क्षेत्र परिवर्तन होने से उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कार्यस्थल पर समायोजन :

पुलिस विभाग अन्य विभागों की तुलना में अत्यधिक जवाबदेही, कार्य का अधिक दबाव, ड्यूटी के अधिक घंटे, अनिश्चित क्षेत्र में तैनाती होती है जिससे महिला पुलिस को परिवार में अधिक समय दे पाना मुश्किल होता है। इसलिए शोधार्थी ने चयनित महिला पुलिस कर्मियों से यह जानने की इच्छा को प्रकट किया कि वे कार्य स्थल पर अपने आप को समायोजित करने के लिए क्या करती है? उनसे प्राप्त उत्तरों को शोधार्थी ने सारणीगत रूप में प्रदर्शित किया है –

सारणी संख्या 05

कार्य स्थल पर महिला पुलिस कर्मियों का समायोजन

क्र0सं0	समायोजन	महिला पुलिकर्मियों की संख्या	प्रतिशत
1	कार्यस्थल पर अत्यधिक समय देकर	36	36
2	सहकर्मियों के साथ घुल–मिल कर	53	53
3	उच्च अधिकारियों के साथ कुशल व्यवहार बनाकर	11	11
योग		100	100

उपर्युक्त सारणी में 53 प्रतिशत अर्थात चयनित महिला पुलिसकर्मियों में से 53 महिला पुलिस ने उत्तर दिया कि वह कार्य स्थल पर अपने सहकर्मियों के साथ घुल मिलकर एक दूसरे की सहायता करके ही अपना कार्य स्थल पर समायोजन कर पाती है व 36 प्रतिशत अर्थात 36 महिला पुलिस कर्मियों ने उत्तर दिया कि जब विभाग में अधिक कार्य होता है तो कार्य स्थल पर अत्यधिक समय देकर ही कार्य स्थल पर समायोजित कर पाती है क्योकि विभागीय कार्य को दूसरे दिन पर टाला नही जा सकता है तथा 11 प्रतिशत अर्थात 11 महिला पुलिस कर्मियों ने उत्तर दिया कि वह अपने उच्च अधिकारियों के साथ कुशल व्यवहार बनाकर विभाग में अपना समायोजन स्थापित कर पाती है।

निष्कर्ष :

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि महिला का पुलिस विभाग में कार्यशील होने पर उनकी असमय ड्यूटी एवं कार्य अवधि अधिक होने के कारण उनके कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं उनके स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। यहां पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि विभाग में अपने सहकर्मियो के सहयोग से विभाग तथा विभागीय कार्यो में समायोजन करना व्यावहारिक एवं सरल हो जाता है।

संदर्भ – सूची :

[1]. सिंह, डॉ0 अमिता : लिंग एवं समाज, विवेक प्रकाशन 2023 दिल्ली, पृ0 99–100

[2]. Maciver, R.M. and Page. C.H. : Society, New Delhi : Macmillan India Limited 1985

[3]. पवार रेनू : कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का समाजशास्त्रीय अध्ययन, शोध मंथन, सितम्बर 2017, पृ0 150–156

[4]. माथुर, दीपा, वुमन, फैमिली एंड वर्क, रावत पब्लिकेशन 1992।

[5]. शर्मा रेखा : ''कार्यस्थल और घर पर समानता'' योजना दिसम्बर 2020, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

Cite this Article

किशन सोनी, डॉ0 अमूल्य कुमार सिंह, ''महिला पुलिस कर्मियों का कार्यस्थल पर समायोजन'', *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 1, Issue 5, pp. 07-11, December 2023.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.